अल्लाह

एक बर्बर कबीलाई सनक



लेखक : नरेन्द्र भारती

यह नगण्य प्रयास

हिंदुकुश पर्वत

को

श्रद्धांजलि स्वरूप समर्पित है।

यह पुस्तक जनहित में, जागरूकता फैलाने के लिए है।
किसी की भावनाओं को आहत करना लेखक का उद्देश्य नहीं है।

लेखक

नरेंद्र भारती

विषयक्रम पृष्ठ संख्या

खतरे की घंटी

आज हर एक व्यक्ति के लिए अल्लाह, इस्लाम और कुरान को जानना तथा इसके क्रूर कुचक्रों को समझना बेहद जरूरी है। क्योंकि यह बर्बर कबीलाई मजहब, मानव अस्तित्व को खुली चुनौती देता है। क्योंकि यह सारी मानवजाति को पूरी निर्दयता से दो भागों में बांटकर एक दूसरे के खिलाफ जंग के लिए खडा कर देता है। एक तरफ है मोमिन, जो अल्लाह को सबसे बडा खुदा मानता है। और दूसरा है काफिर, जो इस विचार से असहमत है। या उसकी पूजा पद्धति इस्लाम से अलग है। अर्थात् भारत के सौ करोड गैरमुस्लिम अल्लाह की नजर में 'काफिर' हैं। इस्लाम की भाषा में 'काफिर' शब्द एक नफरत भरी सबसे गंदी गाली है। गुनाह है। इस्लामी नजर से ऐसे लोंगों को सामान्य जीवन जीने का कोई अधिकार नहीं है। बल्कि, मूर्ति पूजक तो इस्लाम की नजर में गाजर मूली की तरह हैं। उन्हें तो देखते ही काट डालना हर मोमिन का फर्ज बताया गया है। सभी काफिरों को अल्लाह का शत्रु माना गया है। आप गाते रहिए 'ईश्वर अल्लाह तेरो नाम'। उसे रत्ती भर भी कोई फर्क नहीं पडता। अल्लाह ने अपने शत्रु को प्रताडित करने, तडपाने और समूल नष्ट कर देने के ऐसे ऐसे क्रूर तरीके ईजाद किए हैं कि जिनको सुनकर या देखकर पत्थर जैसा दिल भी दहल सकता है। एक आंकलन के मुताबिक यह बर्बर कबीलाई सनक लगभग 27 करोड काफिरों का कत्लेआम कर चुकी है। उसका यह खूनी खेल, आज भी बदस्तूर जारी है। उसके रक्तरंजित चरित्र में रत्ती भर का फर्क नहीं आया है। उसकी शक्ति का अंदाजा इसी बात से लगाया जा

सकता है कि अफगानिस्तान में वह न केवल रूस जैसी महाशक्ति के दांत खट्टे कर चुके हैं बल्कि, अमेरिका जैसी महाशक्ति को उसने उल्टे पांव दौड़ा दिया है। इसलिए उसके हौसले और बुलंद हुए हैं। अफगानिस्तान, पाकिस्तान, बांग्लादेश और काश्मीर के हिंदुओं का तो हमारे देखते देखते ही उन्होने पूरी तरह सफाया कर डाला है।

बडे आश्चर्य का विषय है कि सातवीं सदी के खूंखार बर्बर कबीलों का यह आसमानी फितूर, धर्म का लबादा ओढकर, इक्कीसवीं सदी के भारत में बडी शान से फलफूल रहा है। और पूरी दबंगई और ढीठाई से अपने चौदह सौ साल पुराने ऐजेंडे को आगे बढाने में लगातार कामयाब भी हो रहा है। यह नितांत चिंता का विषय है और भावी पीढियों के लिए खतरे की घंटी है। क्योंकि यह हमारे ही संसाधनों का उपयोग करके हमें समूल नष्ट करने का घोर षडयंत्र है। देखा जाए तो, सेक्युलरिज्म के नाम पर हमें इतना अंधा बना दिया गया है कि हम अपने सर्वनाश की सुपारी अपने कर से चुका रहे हैं। या कहा जाए कि आज भी हम मुगलकालीन जजिया चुकाने को विवश हैं, तो अतिश्योक्ति न होगा। विनाश के इस दुष्चक्र को तोडना फिलहाल असंभव सा लगता है। क्योंकि हमारा राजनीतिक वर्ग इस गंभीर चुनौती को देखकर भी न केवल अनदेखा करने को मजबूर सा लगता है। बल्कि, इस बर्बर सोच के कारनामों को छुपाने प्रयास भी करता है। इस जटिल परिस्थिति में कोई और न सही, हमारी जागरूकता हमें कुछ सहारा अवश्य दे सकती है।

झूठ का साम्राज्य और आत्मविध्वंसक स्थिति

आज मानवता एक ऐसे आत्मविध्वंसक मोड़ पर खड़ी है कि जहां सूचना के तमाम साधन उपलब्ध होने के बावजूद, वह अपने ही संसाधनों के द्वारा अपने ही विनाश की योजना में शामिल है। और कोई सुनने समझने के लिए तैयार भी नहीं है।

सत्ता लोलुप प्रवृत्तियां प्रायः ऐसा कुचक्र रचती है कि जिससे पार पाना आम इंसान के लिए लगभग असंभव हो जाता है। सत्ता सुख की गाड़ी का चक्का दौड़ाए रखने के लिए वे सत्य को कुचलने में जरा भी परहेज नहीं करती। जब लहूलुहान सत्य, पहिए के साथ घिसटता जा रहा हो तो, वे ऐसे ऐसे भ्रम का निर्माण करते हैं कि सच और झूठ के बीच का भेद मिट जाता है। अर्थात् कुएं में ऐसी भांग मिला दी जाती है कि सत्य, असत्य हो जाता है, और असत्य, सत्य के रूप में जगमगाता दिखाई देने लगता है। चोर उचक्के बौने लोग, महान विभूति नजर आने लगते हैं। और सज्जन, खलनायक बन जाता है। इस प्रकार असत्य का शासन स्थापित होकर सदियों तक कायम रहता है। उजाला ना मिलने के कारण लोग अंधकार को ही उजाला मान लेते हैं। और इस अंधकार के युग में होने वाले अत्याचारों, नरसंहारों को सहते सहते उनके संवेदन सुन्न पड़ जाते हैं। कोई रोशनी की एक किरण लेकर बाहर आने का साहस करता भी है, तो वह शत्रु जैसा नजर आता है। मानो कोई आराम में खलल डाल रहा हो। मानो सुचारू चल रही व्यवस्था को कोई अस्त-व्यस्त करना चाहता है। इसलिए, उसे सत्य

और समाज का शत्रु बता कर दंडित किया जाता है। नव चेतना के दमन की यह प्रक्रिया जब बार-बार दोहराई जाती है। तब एक ऐसी बौनी पीढ़ी उभरकर है, जिनमें सत्य को जानने समझने की रुचि ही समाप्त हो जाती है। और वे कृत्रिम नैतिकता, बाहरी सांगोपांग व दोयम दर्जे के मनोरंजक साधनों में लिप्त होकर रह जाते हैं। इस प्रकार प्रश्न पूछने की इच्छा, और अतीत की परतों में झांकने की जिज्ञासा सर्वथा समाप्त कर दी जाती है। कालांतर में, प्रश्न करना ब्लासफेमी बन जाता है। अर्थात् जो भी प्रश्न करेगा, उससे जीवन का अधिकार छीन लिया जाएगा।

इसी प्रकार अल्लाह नाम का जनसंहारक झूठ सदियों तक सभ्य समाजों का सिरमौर बना रहा। और आज वह झूठ हमारी नसों में इतना गहरा धंस चुका है, कि वह प्रार्थनाओं का रूप में ढल चुका है। वह प्रेम की कविताओं में गूथ डाला गया है। वह इंशा अल्लाह माशा अल्लाह, अल्लाह ताला के रूप दैनिक लोकाचार का अभिन्न अंग बन गया है। सदियां गुजरती रहती हैं और कोई यह जानने इच्छा भी नहीं करता कि वास्तविकता क्या है?

क्या इस्लाम और कुरान का खुदा, वास्तव में ईश्वर है? या कुछ और ही षड्यंत्र चल रहा है! इस विषय में भ्रम या अज्ञानता, अब दूर होना चाहिए। क्योंकि बहुत सारी सामाजिक समस्याओं जड यहीं कहीं है।

इस्लाम क्या है?

सातवीं सदी के अरबी लुटेरों ने, लूटमार का एक अनोखा तरीका खोज निकाला। उन्होंने दुनिया के एकमात्र सर्वोच्च, सर्वशक्तमान खुदा तसव्वुर पेश किया, जिसका नाम था अल्लाह। उसके आसमानी संदेशों का झांसा देकर एक शक्तिशाली गिरोह जमा किया। और लूटमार को मजहबी फर्ज या अल्लाह का पवित्र आदेश मानकर अपनी कारगुजारियों को अंजाम देना शुरू किया। लूटमार का यह नया प्रयोग, इतना सफल रहा कि उनके हौसले और हवस दिन ब दिन बढते चले गये। अल्लाह की राह में जिहाद व कत्लेआम एक ऐसी मजहबी पेचीदा तकनीक उभरकर आयी, कि उन्हे यकीन हो चला कि सर्वशक्तिमान अल्लाह वाकई उनके साथ है। अब पूरे विश्व पर अनंतकाल तक एकछत्र शासन करना ही उनके मजहब का अंतिम लक्ष्य बन गया। उनकी कार्यशैली को कुरान की आयत 9:29 समझा जा सकता है। इसे एक छोटी कहानी के रूप में समझते हैं।

तलवारों से लैस मुजाहिद, ‘अल्लाह हू अकबर’ बोलकर एक बस्ती पर अचानक धावा बोलते हैं। प्रतिरोध करने वाले दो चार लोगों को काटकर चौराहे पर टांगकर सबको आतंकित कर देते हैं और, ऐलान करते हैं-

‘‘काफिरों, कान खोलकर सुनो। यह बस्ती खाली करो। क्योंकि यह सारी जमीन, अल्लाह की है।’’

डरे सहमे लोगों ने कहा- ‘‘भाई हम तो यहां सदियों से रहते हैं। यह तो हमारे भगवान की धरती है।’’

मुजाहिद मंदिर में घुंसे और देव प्रतिभा को लात मारकर बोले,
“तुम्हारे सारे खुदा झूठे और नकली हैं। हमारा ‘अल्लाह’ सबसे बड़ा है। चुपचाप अल्लाह के सामने सरेंडर कर दो और इस्लाम कबूल करो। वरना”

किसी ने पूछने का साहस किया- “वरना क्या?”

मुजाहिद गुर्राया- “ अपने जान और माल की सलामती चाहते हो तो हमारे जूते चाटो, जजिया अदा करो और जिल्लत की जिंदगी जिओ।”

अपने मंदिर की देव प्रतिमाओं का अपमान देखकर कुछ लोग तैश में आ गए और उन्होंने इस अत्याचार का विरोध किया। मुजाहिदों ने उनके सर काटकर हवा में उछाल दिए, और तुरंत उनकी महिलाओं और बच्चों को गुलाम बना लिया।

ऐसी बर्बरता देखकर, कोई बेचारा इंसान क्या करेगा? सोचेगा तीन बार कलमा ही तो पढना है, चलो भाई “ला इलाहा इलल्लाह या मोहम्मद रसूल अल्लाह” बोलकर अपनी जान छुड़ा लो। लिहाजा उन्होंने सरेंडर करना ही बेहतर समझा। वे मुसलमान बन गये और राहत की सांस ली। जान बची तो लाखो पाए।

लेकिन, इस्लाम का असली कबीलाई खेल तो अब शुरू होता है। उन भोलेभाले लोगों को नहीं पता था कि वे एक ऐसे शिकंजे में फंस चुके हैं जिसमें से जिंदा बाहर निकलने का कोई रास्ता ही नहीं है।

जितने भी लोग अभी अभी मुसलमान बने थे, सबके हाथों में तलवार थमा दी गई, और नया फर्मान सुनाया गया। “अल्लाह की राह में

जिहाद करो। अल्लाह की खुशी के लिए काफिरों का कत्लेआम करना हर मुसलमान पर फर्ज है।''

लोगों ने पूछा कि ''यह सब करके क्या हासिल होगा?''

जवाब मिला -''माल ए गनीमत यानी लूट का माल। काफिरों को मारो और सारा माल लूट लो। उनकी औरतों और बच्चों को गुलाम बना लो। उनको बाजार में बेच दो या चाहे जैसे इस्तेमाल करो। लेकिन याद रखो कि लूट के माल में पांचवा हिस्सा अल्लाह का होगा, अल्लाह हू अकबर!''

लोग हैरान हो गये। सोचने लगे कि ये कैसा मजहब है भाई?

कबीले के सरदार ने हौसला बढाया- '' डरो मत। अल्लाह हमारे साथ है। जिहाद करोगे तो मालामाल हो जाओगे।''

एक नए नए मुस्लिम ने अपनी लाचारी साफ जाहिर कर दी-

''नहीं सरकार यह सब खून खराबा हमसे ना हो पाएगा।''

सरदार ने मुजाहिदों को हुक्म दिया -''इस मुनाफिक के घर में आग लगा दी जाए। क्योंकि, ये अल्लाह की नाफर्मानी कर रहा है।''

यह सब देखकर दो चार लोग, सरदार के कदमों में गिरकर रोने गिडडिाने लगे-''माफ कर दो सरदार, इस मजहब का पालन हमसे न हो पाएगा। हम यह बस्ती छोडकर कहीं दूर चले जाएंगे।''

सरदार गुर्राया-''इस्लाम को छोडा तो मुर्तद, अर्थात् विधर्मी कहलाओगे। और इस्लाम में मुर्तद की एक ही सजा है। सर, तन से जुदा।''

लोग सोचने लगे अब तो बुरी तरह फंस ही गए हैं, तो ये भी जान लेते हैं कि अगर जिहाद में मारे गए तो तब क्या होगा?

सरदार ने फरमाया कि ‘‘तुम्हारा खून जमीन पर टपकने से पहले जन्नत के दरवाजे खुल जायेंगे।,,

‘‘जन्नत में क्या है जी?’’

‘‘गोरी गोरी बडे बडे स्तनो वाली 72 हूरें तुम्हारा इस्तकबाल करेंगी। चिकने चिकने 70 कमसिन लौंडे भी होंगे। फलदार बाग बगीचे होंगे। शराब के दरिया होंगे। मुजाहिदों, यकीन मानो, अल्लाह की जन्नत में अय्याशी का पूरा इंतजाम तुम्हारा इंतजार कर रहा है।’’

जन्नत का ख्याल करके सबकी आंखों चमक आ गई। लार टपकने लगी। इतनी सारी हूरों का तस्सवुर करके मंद मंद मुस्कुराते जुम्मन चचा कुछ मन में ऐसा सवाल उठा, जिसे पूछने में शर्म आ रही थी। लेकिन सरदार समझ गया और मुस्कुराकर बोला-‘‘फिक्र न करो, अल्लाह बडा रहम दिल है, सौ सौ मर्दों की ताकत भी देगा।’’

सब हैरान होककर एक दूसरे का मुंह ताकने लगे। माशा अल्लाह, ये तो बेहतरीन मजहब है। इस जहां में काफिरों का माल उडाओ और उनकी औरतों से मस्ती करो। और जन्नत के तो खैर क्या कहने। हम तो आज जाहिल थे। अंधेरे में थे। अल्लाह का दीन ही सच्ची रौशनी है। सरदार ने दहाड मारी ‘‘नारा ए तक्बीर’’। सबने पूरे जोश में जवाब दिया-‘‘अल्लाह हो अक्बर।’’

नए सदस्यों के शामिल होन से मुजाहिद गिरोह की ताकत अब पहले से दुगुनी हो चुकी थी। वे जोशो खरोश से लबरेज हो चुके थे। सबने तलवार उठाई, घोड़े पर सवार हुए, और अल्लाह की राह में जिहाद पर निकल पड़े। बस्ती दर बस्ती, कबीला दर कबीला, कब्जा

करते चले गये। जो व्यवहार उनके साथ मुजाहिदों ने किया था, वैसा ही व्यवहार से दूसरों के साथ करने लगे। इस प्रकार इस्लाम के फैलने का एक अंतहीन सिलसिला शुरू हो गया। करोड़ों करोड़, निर्दोष लोगों का कत्लेआम शुरू हुआ। पुरातन सभ्यताएं नष्ट कर दी गई। ज्ञान परंपराओं को जलाकर राख कर दिया गया। महिलाओं और बच्चों को सामान की तरह बाजारों में खरीदा और बेचा गया। और यह सिलसिला आज भी जारी है। इराक में सिगरेट के पैकेट के बदले हमने यजीदी महिलाओं को बेचे जाते हम सबने देखा है। छोटे छोटे इस्लामी मुल्कों में यह सब आज भी चल रहा है। हर कट्टर मुसलमान अपनी खोपडी में जन्नत का फितूर लिए घूम रहा है। जिसके लिए वह मरने मारने को हमेशा तैयार रहता है। उसे लगता है कि उसके दोनो हाथ में लड्डू हैं। काफिर को मार दिया तो मरने के बाद अल्लाह का बोनस मिलेगा। खुद मारा गया तो जन्नत तो मिलनी ही मिलनी ही है।

कुल जमा ये है, 'दीन ए इस्लाम' और उसकी जिहादी तकनीक। इसमें ज्ञान, विज्ञान, अध्यात्म, दर्शन, चिंतन, चेतना, गीत, संगीत, मानवता, सह अस्तित्व, का एक तिनका भी नहीं है। आश्चर्य की बात है कि आज दुनिया इसे 'धर्म' कहती है। एक खूंखार दरिंदा सोच ने दुनिया इतना मजबूर कर दिया कि सब लोग उसे ईश्वर मानने लगे। दुनिया के बडे बडे रणनीतिकार आज भी इस जिहादी तकनीक का लोहा मानते हैं। इस विषय में काफिर की अज्ञानता इसे और भी धारदार बना देती है।

काफिर की त्रासदी

इस्लाम का अधिकांश भाग काफिर से नफरत और उसे समूल नष्ट करने के षडयंत्रों की बुनियाद पर टिका है। लेकिन, इस जंगी फितूर से अनजान काफिर भजन में मगन हैं 'ईश्वर अल्लाह तेरो नाम'। काफिर की इसी अज्ञानता व भोलेपन का फायदा उठाकर अपने कारनामों को अंजाम देना, इस्लाम बखूबी जानता है। जिसके कारण काफिर लोग इस्लाम के चंगुल में ऐसा फंस जाते हैं, कि उन्हें पता ही नहीं चलता कि वे अपने सबसे बडे शत्रु का रक्षा कवच स्वयं बन गए हैं। काफिर की चुनौती तब और बढ जाती है, जब तरह तरह के इस्लाम उसके सामने आकर खडे हो जाते हैं। जैसे, अल्लाह का इस्लाम, मुल्ला का इस्लाम, देहलवी का इस्लाम, बरेलवी का इस्लाम, देवबंद का इस्लाम, अहमदिया, सूफी, आदि की इस लिस्ट नए नाम और आ गए हैं, रेडिकल इस्लाम, पॉलिटिकल इस्लाम, रिलिजस इस्लाम आदि। एक दिन जब इस्लामी झुंड से एक इस्लाम बाहर आता है और बम फोड़कर झुंड में छुप जाता है। तुरंत पूरा इस्लामी झुंड एक सुर में कोरस गान शुरू हो जाता है। ''नहीं नहीं नहीं, ये सच्चा इस्लाम नहीं है।'' ''मजहब नहीं सिखाता आपस में बैर रखना'' ''इस्लाम तो शांति और भाईचारे का मजहब है।'' ''इस्लाम कहता है कि एक इंसान की हत्या, पूरी इंसानियत की हत्या है।'' लीपापोती के लिए सेक्युलर, लिबरल, बुद्धिजीवियों की जमात तुरंत बाहर आती है, और चोट खाए काफिर को ही जलील करने लगती है कि 'हम तुम्हें इस्लामोफबिया नहीं फैलाने देंगे।'

इस्लामी चालबाजियों से अनजान, बिचारा लहूलुहान काफिर आत्मग्लानि से भर जाता है। और सोचता है कि बुरे लोग तो हर मजहब में होते हैं। उसने बेवजह इस्लाम पर शक किया। गंगू जुम्मन तहजीब के तानेबाने को छेडकर पाप किया। और यह सिलसिला सदियों तक इसी तरह लगातार चलता रहता है। क्योंकि काफिर नहीं जानता कि इस्लामी झुंड उसके साथ जो क्रूर खेल खेल रहा है, इस्लाम की भाषा में उसे ‘अलतकैया’ अर्थात् पवित्र धोखा कहा जाता है। काफिर से झूठ बोलना, उसे धोखा देना, भरमाए रखना, इस्लामी रणनीति का हिस्सा है। काफिर यह भी नहीं जानता कि अल्लाह उसे ‘इंसान’ की श्रेणी में गिनता ही नहीं। अब काफिर बिचारा क्या करे? 72 किस्म के इस्लामी झुंड में पता नहीं कौन सा इस्लाम सच्चा है? सारे इस्लाम खुद को सच्चा और अस्ली साबित करने का दावा कर रहे हैं। इस्लामी अलतकैया के दुष्चक्र को तोडने का सबसे अच्छा व प्रामाणिक तरीका है, अल्लाह के किरर्दार को समझना। पूरे इस्लामी झुंड का अल्लाह एक ही है। और उससे बडा कोई खुदा भी नहीं है। उसे कोई झुठला भी नहीं सकता। लिहाजा, अगर हम अल्लाह के कैरेक्टर को सही सही समझ लें, तो मानिए, इस्लाम की पूरी विषय वस्तु हमारी मुट्ठी में आ सकती है। यह कोई रॉकेट साइंस नहीं है। दबंगई, धमकी और हिंसा के दम पर थोपा हुआ कुछ ऐसा है, जिसे वो पर्दे में रखना चाहते हैं। इस्लाम काफिर इर्द गिर्द मंडराते जोम्बी की तरह है। इसलिए काफिर का अधिकार है कि वह इस पर्दे को हटाकर देखे कि उसके खिलाफ क्या क्या नजराने हैं?

इस्लाम के अल्लाह का चरित्र

1- रहमान रहीम

कुरान का अल्लाह कहता है कि तुमने लूटमार, हत्या, बलात्कार जैसे चाहे जितने भी संगीन अपराध किए हो, मुझे सबसे बडा खुदा मान लो और मेरी शरण में आ जाओ, कलमा पढ़ो तुम्हारे सारे गुनाह माफ हो जाएंगे। गजब की रहमत है भाई, जो पीड़ित पर नहीं जालिम पर बरसती है। गाय पर नहीं कसाई पर बरसती है। जो खुदा कहता है, मार डालो, काट डालो, आग लगा दो, लूट लो, गुलाम बना लो, और लूट के माल का पांचवां हिस्सा मुझे दे दो। वाह! गजब की रहमत है! गजब की खुदाई है! यहां किसी गैर मुस्लिम को मार काट डालना, गैरमुस्लिम महिला से बलात्कार, कोई अपराध ही नहीं है।

2- अलगाववादी

इस्लाम का खुदा, सारी मानवता को दो भागों में बांट देता है। एक है मोमिन दूसरा काफिर। मोमिन उसका लाडला है। काफिर उसका सबसे बडा दुश्मन है। इसलिए, अल्लाह की सारी नेमतें, जन्नत की अय्याशियां सिर्फ मोमिन के लिए हैं। काफिर कितने भी नेक काम कर ले, उसे तो जहन्नुम की आग में ही जलना पडेगा। अल्लाह के दिल में उसके कोई रहम रियायत है। यह विचित्र खुदा काफिर और मोमिन को एक साथ बिल्कुल भी नहीं देखना चाहता। हिंदू मुस्लिम भाईचारे पर अल्लाह की सख्त पाबंदी है। अगर किसी मुस्लिम ने ऐसा किया तो वह भी अल्लाह के अजाब से नहीं बच पाएगा।

3- नफरत और गुस्सा

इस्लाम का अल्लाह, हर वक्त नफरत की आग में सुलगता रहता है। क्योंकि, दुनिया में जितने भी लोग उसे ‘ इकलौता सबसे बडा खुदा’ नहीं मानते, उनसे वह बेहद नफरत करता है। वह उन्हें एक पल के लिए भी जिंदा देखना नहीं चाहता। कोई मोमिन, काफिर से दोस्ती करे तो वह उसे भी जहन्नुम की आग में झौंकने की धमकियां देता है। यहां तक कि अगर किसी का भाई या पिता इस्लाम को नहीं मानता, तो वह उनसे भी सारे रिश्ते नाते तोड लेने की हिदायत देता है। और तो और, उसकी नफरत का आलम देखिए, वह हिदायत देता है कि तुम्हारे बीवी बच्चे भी तुम्हारे दुश्मन है। क्योंकि वे अल्लाह की तरफ से तुम्हारा ध्यान भटकाते हैं। इस्लाम का अल्लाह काफिरों को गालियां भी देता है। जैसे, जहन्नुम का कुत्ता, जहन्नुम इंधन, सूअर, बंदर, गलीज, दुनिया के किसी भी जानवर से बद्तर।

4 - आतंकवादी मानसिकता

अल्लाह, अपने अनुयायियों को आतंक मचाने के लिए उकसाता है। बार-बार कत्लेआम करने के फरमान जारी करता है। वह काफिरों के दिलों को खौफ से थर्रा देना चाहता है। वह अपनी आसमानी किताब में बार बार धमकी देता है, अल्लाह से डरो। अल्लाह का खौफ खाओ। अल्लाह से बडा कोई नहीं है। काफिरों को डराओ, धमकाओ, परेशान करके रखो। तुम जितनी दहशत पैदा करोगे, अल्लाह उतनी ही नेकी तुम्हारे नाम लिख देगा।

5 -शेखीबाज डींगमार

अल्लाह अपनी आसमानी किताब में भरपूर डींगे मारता है। खुद की तारीफ करते नहीं थकता। जैसे, हमने ऐसा कर दिया। ऐसा कोई और नहीं कर सकता। ऐसा कोई करके दिखा दो। कोई मेरे जैसी एक आयत बनाकर कर दिखा दो। अल्लाह बहोत ताकतवर है। लूट के माल में पांचवा हिस्सा मांगने वाला अल्लाह, सफाई भी देता है कि यह मत समझना कि अल्लाह के पास किसी चीज की कमी है। अल्लाह हर तरह से सक्षम है। अल्लाह सब जानता है। वह चाहे तो दूसरा गिरोह भी बना सकता है। अल्लाह से बडा षड्यंत्रकारी कोई नहीं है।

6- सेक्सुअल ऑब्सेशन

अल्लाह की सेक्स में विशेष रूचि है। गुलाम महिलाओं के साथ कब-कब, क्या-क्या, कैसे-कैसे किया जा सकता है, इस विषय में इस्लाम का खुदा बड़ी डिटेल में बात करता है। गुलाम औरत से सहमति मांगने की जरूरत नहीं है। वह तो तुम्हारी खेती है। अपनी खेती में जब चाहो जिधर से जा सकते हो। छोटी बच्ची के साथ भी जायज है। पागल औरत के साथ भी जायज है। भेड बकरी जो मिल जाए सबके के साथ जायज है। यहां तक की मुर्दा औरत के साथ सेक्स करने में कोई बुराई नहीं है। और तो और कमसिन उम्र मुलायम लड़कों के साथ भोग करने का लालच भी अल्लाह देता है। अर्थात, इस्लाम का खुदा, पीडोफीलिया और नैक्रोफीलिया का भरपूर समर्थन

करता है और प्रलोभन देता है। यही सब अल्लाह की जन्नत है। इसके अतिरक्त इस्लाम में कोई आर्कषण नहीं है। प्रसिद्ध पाकिस्तानी लेखक खालिद उमर, कहते हैं कि अल्लाह किसी वेश्यालय की दरबान जैसा लगता है।

7- क्रूरतम बर्बरता

जो लोग इस्लाम के अल्लाह को 'इकलौता, सबसे बडा खुदा' नहीं मानते, तथा जो अलाह की आयतों से इंकार करते हैं, उनको मारने काटने के लिए अल्लाह ने, अपने बंदों को लोहा दिया है। अर्थात् तलवार दी है, और हुक्म दिया है कि जहां मिल जाएं कत्ल करो। घात लगाकर कत्ल करो। एक तरफ का हाथ और दूसरी तरफ की टांग काट दो। अल्लाह इतने भर से भी संतुष्ट नहीं है। काफिर को मरने बाद भी नहीं बख्शा जाएगा। वहां भी अल्लाह जहन्नुम की आग सुलगाए बैठा है। काफिर को जलाकर उसकी चमडी उतारी जाएगी। फिर नयी चमडी चढाकर उसे फिर जलाया जाएगा। फिर जलाया जाएगा, फिर उतारा जाएगा। अल्लाह की राह में कत्ल करना या कत्ल हो जाना सबसे अच्छा और पवित्र कार्य है। मतलब, आप अल्लाह के पाले में हैं तो जिहाद करके दूसरों का खून बहाना है। यदि आप अल्लाह के पाले में नहीं है तो आप के प्राणों को बचाने का कोई उपाय ही नहीं है। काफिर का खून तो हर हाल में बहना है। यदि कोई अल्लाह के पाले से भागना चाहता हैं, तो उसका भी सर तन से जुदा करने का आसमानी हुक्म है। मतलब हर हाल में हर किसी का खून दो बहना ही

बहना है। अल्लाह का यही मकसद है। अल्लाह का दीन इतने भर से भी संतुष्ट नहीं है। वह बर्बता का सारी हदों को तोडकर आगे निकालता है। जो अल्लाह का इस्लाम छोड देते हैं, वे मुर्तद हैं। विधर्मी हैं। उनको मारकर, काटकर, पकाकर खाया जा सकता है। अगर वो मुर्दा है, तो उसकी लाश को कच्चा भी खाया जा सकता है। दुनिया के सबसे बडे नरसंहारों का प्रेरक अल्लाह क्रूरता की असीम ऊंचाइयों को छूकर सारे संसार को कयामत तक आतंकित रखना चाहता है। उसकी क्रूरता की मिसालों को शब्दों में बयान करना अत्यंत कठिन है।

8 - झूठा, मक्कार और अज्ञानी

गजब कहां खुदा है भाई, जो शान से कहता है झूठ बोलो। धोखा दो। अल्लाह, काफिरों को सही रास्ता भी नहीं दिखाता। अल्लाह कहता है, मैं ही लोगों को गुमराह कर देता हूं। अल्लाह की जिहाद में बोला गया झूठ और धोखा भी बड़ी पवित्र चीज है। संसार का निर्माता अल्लाह कितना अज्ञानी है, इसके सबूत उसकी आसमानी किताब में मौजूद है। जैसे, वह बड़े गुमान से कहता है कि धरती को हमने कारपेट की तरह बिछा दिया है। धरती चपटी और स्थिर है। क्योंकि, मुस्तफा इस पर आराम फरमा रहे हैं। सूरज कीचड़ में डूब जाता है। जहन्नुम से उठने वाली भाप के कारण धरती पर गर्मी पड़ती है आदि आदि।

आश्चर्य की बात है कि ज्ञान, ध्यान, चिंतन, धर्म, दर्शन, आध्यात्मिकता, नैतिकता, गीत, संगीत, कला, प्रेम, सदाचार, अहिंसा,

दया, मानवता, जगत कल्याण, आदि श्रेष्ठतम मानव मूल्यों में अल्लाह की कोई रुचि नहीं है।

बस एक ही कबीलाई सनक है। 'इकलौते अल्लाह को सबसे बडा खुदा मानना है। अल्लाह से डरकर रहना है। अल्लाह का बताया हुआ काम, जिहाद करना है। काफिरों का नामोनिशान मिटाना है। और, जी भरकर जन्नत के मजे लूटने हैं। बस्स।

ये है जी, इस्लाम का कबीलाई शिकंजा। जिसे आप इस्लाम धर्म कहते हैं। और ये रहा, इस्लाम का अल्लाह। जिसे आप खुदा ईश्वर या गॉड समझते हैं।

इस्लाम एक ठहरा हुआ पानी है। जिसमें कोई रवानी कहां से आए? खालिस धमकी, दबंगई, हिंसा, सर तन से जुदा जैसी बर्बरता, सबसे अलग दिखने और रहने की जिद्द। यह बर्बर कबीलाई सनक हमें कहां लेकर जा रही है?

असतो मा सद्गमय

Contact

anbharati@gmail.com